Date
Page 1

हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द।

भूमिका ⇒ मानवीय राग, मनोभाव, विचार अनुभूति एवं कल्पना की अभिव्यक्ति का नाम ही साहित्य है। साहित्य की विविध विधाओं में से 'उपन्यास' विधा एक है जो अपना अलग महत्व बनाती है। उपन्यास संस्कृत भाषा का प्राचीन शब्द है किन्तु आधुनिक युग में इसका प्रयोग सर्वथा नवीन साहित्य विधा की अभिव्यक्ति के लिए एक दम भिन्न अर्थ में किया जाने लगा है।

उपन्यास का अर्थ

उपन्यास शब्द उप + न्यास के योग से बना है। जिस में 'उप' उपसर्ग है और 'न्यास' धातु है। जिसका अर्थ है - 'निकट रखना'। अर्थात् कोई निकट रखी हुई वस्तु या कृति (रचना) जिसे पढ़कर ऐसा लगे कि यह हमारी ही है। इसमें हमारे ही जीवन का प्रतिबिम्ब है अथवा हमारी ही कथा हमारी ही भाषा में कही गई है।

उपन्यास की परिभाषा

उपन्यास की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा भिन्न-भिन्न दी गई है।

Scanned with OKEN Scanner

पाश्चात्य विद्वान

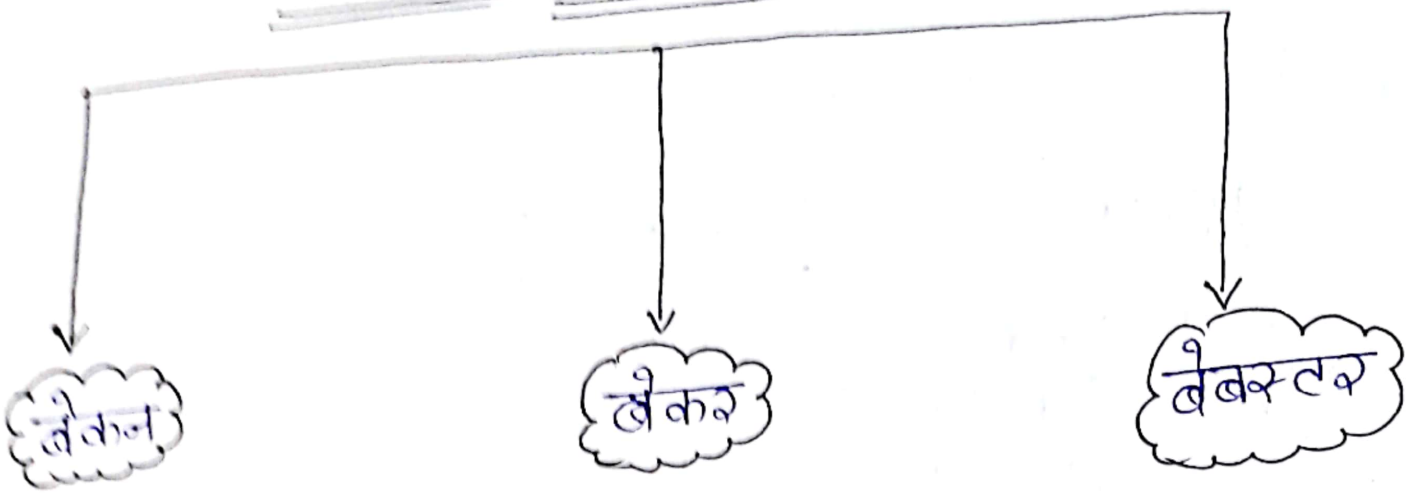

भारतीय विद्वान

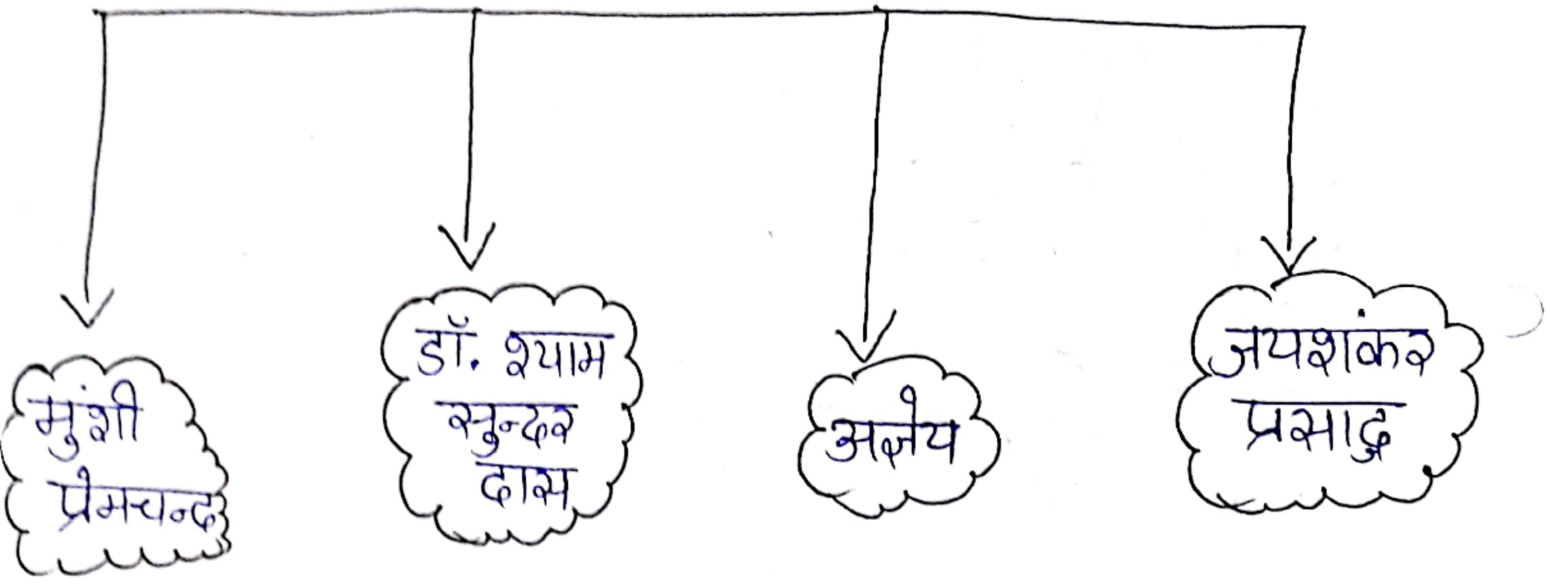

Scanned with OKEN Scanner

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार :-

'बेकन' के अनुसार, "उपन्यास कल्पित इतिहास है।"

'बेकर' के अनुसार, "उपन्यास वह रचना है जिसमें किसी कल्पित गद्यमय कथा के द्वारा मानव जीवन की व्याख्या दी गई है।"

'वेबस्टर' के अनुसार, "उपन्यास एक ऐसा कल्पित विशालकाय तथा गद्यमय आख्यान है जिसमें एक ही कथानक के अन्तर्गत जीवन का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्रों और उनके क्रियाकलापों का चित्रण रहता है।

भारतीय विद्वानों के अनुसार :-

मुंशी प्रेमचन्द के अनुसार, "मैं उपन्यास को मानव (जीवन) चरित्र का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव चरित पर प्रकाश डालना ही उपन्यास का मूल तत्व है।"

डॉ. श्याम सुन्दर दास के अनुसार, "उपन्यास

मनुष्य के वास्तविक जीवन की काल्पनिक कथा है।"

'अज्ञेय' के अनुसार, "उपन्यास व्यक्ति के अपनी परिस्थितियों के साथ सम्बन्ध की अभिव्यक्ति में उत्तरोत्तर विकास का प्रतिनिधित्व करता है।"

जयशंकर प्रसाद के अनुसार, "मुझे कविता और नाटक की अपेक्षा उपन्यास में यथार्थ का आंकना सरल प्रतीत होता है।"

हिन्दी उपन्यास और प्रेमचन्द

प्रेमचन्द ने अपने साहित्य साधना में यद्यपि गद्य - साहित्य की अनेक विधाओं को स्पर्श किया है, किन्तु वास्तव में वे कथा-शिल्पी ही है। कहानी तथा उपन्यास के क्षेत्र में उनके कथा - शिल्प का विशेष उन्मेष जगा है। वे अपने इस क्षेत्र के एकमात्र सम्राट है।

उनके कृतित्व का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है :-

सेवा सदन => प्रेमचन्द ने जीवनी - लेखकों के आधार पर श्री महावीर प्रसाद पोद्दार की प्रेरणा से 'सेवा सदन' नामक उपन्यास हिन्दी में लिखा और तब से वे निरन्तर हिन्दी में लिखते चले गए। 'सेवा सदन' उनकी तीसरी औपन्यासिक रचना है जिसे 'गोरखपुर' में सन् 1916 ई. में प्रकाशित किया गया।

प्रेमाश्रय => इसका रचनाकाल सन् 1918 ई. है, किन्तु इसका प्रकाशन 1922 ई. में 'कलकत्ता' से हुआ। उपन्यास की सम्पूर्ण कथा ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर नाम के दो बिन्दुओं से संचालित होती है।

रंग - भूमि => इसकी रचना तिथि सन् 1924-25 ई. है। इसका प्रकाशन कार्य सर्वप्रथम 'लखनऊ' में सम्पन्न हुआ। 'रंग-भूमि' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि लेखक ने सूर की कथा में पात्रों को संयुक्त करके उनके व्यक्तित्व के विकास से उनकी व्यक्तिगत कथा को भी विकसित किया है।

कायाकल्प => इसका प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। यह प्रेमचन्द का सर्वप्रथम उपन्यास है। जिसकी मूल पाण्डुलि

हिन्दी में प्राप्त होती है। इसमें नारी समस्या के चित्रण में उपन्यासकार ने बहुविवाह प्रथा और उसके परिणामों पर दृष्टिपात किया है।

निर्मला ⇒ इसका प्रकाशन सन् 1923 ई. में हुआ। सन् 1927 ई. में लखनऊ से प्रकाशन हुआ। 'निर्मला' में मध्यवर्गीय समाज का चित्र प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास में अनमेल विवाह और दहेज की समस्या पर दृष्टिपात किया गया है।

प्रतिज्ञा ⇒ चाँद पत्रिका में 'निर्मला' के धारावाहिक रूप से प्रकाशित होने के एक मास पश्चात, ही जनवरी सन् 1927 ई. से 'प्रतिज्ञा' उपन्यास धारावाहिक रूप से छपना प्रारम्भ हो गया था।

गबन ⇒ इसका प्रकाशन सन् 1930 ई. में हुआ। 'गबन' मध्यवर्गीय समाज का चित्रण करता है। इसमें नारी की सामाजिक - आर्थिक स्थिति पर दृष्टिपात किया गया है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने भारतीय पुलिस विभाग की कार्य प्रणाली का बड़ी निर्भीकता से पर्दाफाश किया है।

Scanned with OKEN Scanner

★ कर्म-भूमि => इसका प्रकाशन सन् 1932 ई. में हुआ। 'कर्मभूमि' का प्रणयन गाँधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन और उत्तर प्रदेश के किसानों के लगानबन्दी आन्दोलन की पृष्ठभूमि पर हुआ है। इस उपन्यास में प्रेमचन्द ने हमारे समाज के आर्थिक विषमता का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है।

★ गोदान => इसका प्रकाशन सन् 1936 ई. में 'बनारस' से हुआ। उपन्यास कला के सर्वोत्कृष्ट रूप के दर्शन प्रेमचन्द के अन्तिम उपन्यास 'गोदान' में हुए थे। 'गोदान' प्रेमचन्द का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। इस उपन्यास में महाजनी शोषण का भी बड़ा चित्रण 'गोदान' में हुआ है।

★ मंगल-सूत्र => प्रेमचन्द का अन्तिम उपन्यास 'मंगल-सूत्र' है, जिसकी रचना 1936 ई. में हुई। इसके चार परिच्छेद ही लिखे जा सके थे कि उपन्यासकार का देहांत हो गया। 'मंगल सूत्र' वर्तमान सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के प्रति उपन्यासकार का बढ़ता असन्तोष व्यक्त करता है। इनमें नारी समस्या पर भी दृष्टिपात किया गया है।

★ मंगलाचरण => प्रेमचन्द के कुछ प्रारम्भिक

उपन्यास है जो अभी तक अनुपलब्ध थे, 'मंगलाचरण' शीर्षक से प्रकाशित हुए। 'प्रेमा' हिन्दी में प्रकाशित होने वाला प्रेमचन्द का प्रथम उपन्यास है। यह बाबू नवाबराय 'बनारसी' के नाम से प्रकाशित हुआ था। 'रुठी रानी' का प्रकाशन 'उर्दू' साप्ताहिक जमाना में अप्रैल 1907 से अगस्त 1907 तक धारावाहिक रूप में हुआ था।

निष्कर्ष => संक्षेप में प्रेमचन्द के समस्त उपन्यासो का अध्ययन करने के पश्चात हम कह सकते है कि प्रेमचन्द सुधारवादी थे। इसलिए वे वस्तु का चित्रण यथार्थ में करते हुए भी आदर्श उपस्थित करने का प्रयास करते है।

Scanned with OKEN Scanner